चतुर्थ अध्याय

"नागार्जुन के उपन्यासों में चित्रित ग्राम जीवन: राजनीतिक संदर्भ"

चतुर्थ अध्याय

''नागार्जुन के उपन्यासों में चित्रित ग्राम जीवन - राजनीतिक संदर्भ''

4.1 प्रस्तावना ।

4.2 नागार्जुन के उपन्यासों में चित्रित राजनीतिक स्थिति -

4.2.1 राजनीति।

4.2.2 अवसरवादी नेता।

4.2.3 चुनाव।

4.2.4 राजनीति सत्ता प्राप्ति का साधन।

4.2.5 ग्रामीण जीवन में वर्तमान राजनीतिक स्थिति।

4.2.6 राजनीतिक शोषण।

4.2.7 भ्रष्ट नेताओं का परदाफाश।

4.2.8 राजनीति में परिवर्तन।

निष्कर्ष ।

चतुर्थ अध्याय

''नागार्जुन के उपन्यासों में चित्रित ग्राम जीवन - राजनीतिक संदर्भ''

4.1 प्रस्तावना :-

भारतीय समाज व्यवस्था में सामाजिक जीवन पर प्रभाव डालनेवाले पहलुओं में राजनीतिक दल का विशेष महत्त्वपूर्ण स्थान है। राजनीतिक दल के कारण समाज व्यवस्था में विशेष रूप से परिवर्तन हुआ है। आजादी के बाद हमारी अपनी सरकार आयी। देश का कारोबार सही ढंग से चलाने के लिए संविधान बनाया गया। अपनी सरकार आने से भारतीय समाज में एक खुशी की लहर दौडी, हर एक इन्सान सुख-शान्ति और समृद्धि के सपने देखने लगा था। लेकिन जिनके हाथों में देश की बागडौर आयी उनकी कथनी और करनी में अंतर आ गया। दुमुँहापन इस वर्ग की जिन्दगी का प्रधान अंग बन गया। स्वाधीनता से पहले देश के दुश्मन बाहर के लोग थे, परंतु स्वाधीनता के बाद दुश्मन बाहर के नहीं बल्कि भीतर के ही दिखाई देने लगे। भ्रष्ट नेताओं ने अपने स्वार्थ के लिए राजनीति को भ्रष्ट कर दिया। भ्रष्ट और चारित्र्यहीन नेता बडे तादाद में निर्माण होते गए। इसकारण राजनीति का स्वरूप ही 'सर्वान्त सुखाय' की अपेक्षा 'स्वसुखाय' के लिए हो गया। वर्तमान राजनीति के भ्रष्ट स्वरूप के बारे में डॉ. रमेश देशमुख ने लिखा है - ''देश में बहुमुखी राजनीति का पतन हुआ है, उसने नैतिकता के सभी मूल्य ध्वस्त कर दिए। जनता के सभी मसलें, चाहे वे रोटी के हो, चाहे धर्म के, वोट की नीति से तय होने लगे। सत्ता द्वारा भ्रष्टाचार और दुश्चरित्रता के संरक्षण एवं अपराध तथा राजनीति के गठजोड से जन-जीवन में असहायता और असुरक्षा की भावना भर दी। वोट की राजनीति में संकिर्ण जातिवाद और गुटबंदी को भरपूर प्रश्रय दिया। परिणामस्वरूप जनता का विश्वास भी प्रकार की संवैधानिक रक्षात्मक इकाईयों से उठ गया।''[1] इस प्रकार राजनीति का स्वरूप ही बदल गया।

राजनीति यह शब्द राज + नीति से बना आजादी के पहले राजनीति स्वतंत्रता प्राप्ति का अस्त्र थी। उदारनीति समता की प्रवृत्ति थीं, सेवा का देशभक्ति का साधन थी अब स्वार्थ-पूर्ति-पद प्राप्ति का माध्यम बनी है। आजादी के पहले से नीति थी अब इस पर अनीति हावी हो गयी है। गांधी, नेहरू, शास्त्री आदर्श थे, अब कोई नहीं है, बदलते राजनीति के मूल भ्रष्ट नेता ही है। संविधान के पहरेदार संविधान को ध्वस्त कर रहे है। गुण्डा, बदमाश, डकैती, बलात्कारी लोग

संसद में जा रहे है, बॅलेट की अपेक्षा बुलेट, वोट की अपेक्षा नोट कि राजनीति होने में गांधी का 'आदर्श समाज' एक 'हवाई सपना' नजर आ रही है। साहित्यकारों ने दलगत, संप्रदायगत, धर्मगत बनी राजनीति को नकारा है परंतु नेताओं ने इसे पाला-पोसा है, वही आज की विडम्बना है।

आजादी हासिल करने के लिए जिन-जिन नेताओं ने अपना सर्वस्व दाँव पर लगाया, आजादी के बाद वही नेता स्वार्थी और भ्रष्टाचारी बन गए। ऐसे स्वार्थी, भ्रष्ट नेताओं ने अपने स्वार्थ पूर्ति के लिए और सत्ता को कायम रखने के लिए भ्रष्टाचार, बेईमानी को अपने हथियार बनाया। इन लोगों ने जनता का शोषण किया, उन्होनें भी लोगों का अज्ञान और अशिक्षा का फायदा उठाया। सत्ता को हासिल करने के लिए धर्म एवं जाति के नाम पर वोटों की माँग करने हेतू, ये लोग कभी मंदिरों में जाते तो कभी मसजिद में। वोटों को खरीदना, विपक्ष के नेता को लालच दिखाकर अपने पक्ष में लेना, गुण्डागर्दी करना, लोगों में जाति के नाम पर दंगे-फसाद करवाना आदि जैसी हरकतें शुरू की है। इसमें सामान्य जनता पिसती जा रही है। चुनाव नजदिक आते ही नेतागण जनता के सामने सुख-सुविधाओं के, गरीबी हटाने के, आर्थिक स्थिति सुधारने के झूठे आश्वासन देते है। चुनाव जितने के बाद वे अपने वादों को तोड देते है यहाँ तक उन्हें अपने दिए हुए वादे याद तक नहीं रहते। ये नेता सिर्फ बातें करते हैं, नारेबाजी का बाजार खडा करते, लेकिन करते कुछ नहीं है। उनके कथनी और करनी में अंतर होता है। शहरों तथा ग्रामों के लिए जो भी विकास योजनाएँ कागज पर कार्यान्वित होती हैं वह गाँवों तक पहुँचती ही नहीं, बीच में ही रूपए हड़प करते है। सामान्य जनता इनके हाथ की कठपुतलियाँ होती है। इस बारे में गोविन्द सदाशिव घुर्ये लिखते है - ''इस वर्ग का एक विभाग पूँजीपति के हाथ की कठपुतली है तो इसका दूसरा विभाग न केवल पूँजीपतियों के विरूद्ध विचारों तथा भावनाओं को प्रकाशित करता है अपितु सर्वहारा वर्ग के नेतृत्व के एक भाग की पूर्ति भी करता है।''[2] नेताओं की इस प्रवृत्ति के कारण देश का विकास नहीं हो रहा है। ग्रामों की स्थिति ज्यों की त्यों रही है, इसका नागार्जुन ने अपने साहित्य में चित्रण किया है।

4.2 नागार्जुन के उपन्यासों में चित्रित राजनीतिक स्थिति :-

नागार्जुन राजनीतिक दृष्टी से एक सजग लेखक है, जो तमाम चीजों को गहराई से समझते है और परखते है। नागार्जुन के राजनीतिक विचार सरल और स्पष्ट हैं। वे समकालिन राजनीति और उससे संचालित जीवन से जुडे हुए हैं। अपनी सीधी-साधी भाषा में राजनीतिक स्थिति का तिखे शब्दों में चित्रण करते है। 'रतिनाथ की चाची' (1948), 'बलचनमा' (1952), 'नई पौध'

(1953), 'बाबा बटेसरनाथ' (1954) में ग्रामीण समाज जीवन के राजनीतिक संदर्भों को कहाँ तक चित्रित किया है? इस पर यहाँ हम विचार करेंगे।

4.2.1 राजनीति :-

प्राचीन काल से आज तक समाज व्यवस्था में 'राजनीतिक पक्ष' को अनन्यसाधारण महत्त्व है। राजनीति के बलबुते पर ही देश की शासन प्रणाली चलती है। लेकिन देश की वर्तमान राजनीति और नेता भ्रष्ट हो गए हैं। आजादी की लड़ाई में नेताओं ने भाषणों में स्वतंत्रता के सुनहरे सपनो के साथ गरीबी हटाने तथा समता और बंधुत्व प्रस्थापित करने के वादें किए थे। इसलिए क्रांतिकारियों ने अपने सर्वस्व त्याग कर स्वतंत्रता आन्दोलन में हिस्सा लिया था। देश आजाद होने पर सामान्य लोग उनके सपनों की पूर्ति का इंतजार करने लगे, किन्तु उनके सपने अधूरे रह गए। नेता अपने स्वार्थ के लिए सत्ता का गलत प्रयोग करने लगे। सत्ता हथियाने के लिए गलत तरीके अपनानें लगे, इसलिए राजनीति खोखली बन गई। "उच्च वर्ग देश का शासक बन बैठा। दुमुँहापन इस वर्ग की जिन्दगी का प्रधान बन गया। जिसके हाथों में देश की बागडोर आई उनकी कथनी और करनी में अंतर आ गया।"[3] यहाँ पर स्पष्ट होता है कि ये नेता जो कहते है वह करते नहीं और जो वह करते है वह कहते नहीं है।

'रतिनाथ की चाची' (1948) में नागार्जुन ने राजनीतिक संदर्भ को स्पष्ट करते हुए शतरंज की खिलाडिन दमयंति का जिक्र किया है - "एक सम्मानित व्यक्ति की बुद्धीमती बेटी होने के नाते गाँव के सामाजिक जीवन में दमयंति का जो स्थान है, वह उपेक्षणीय नहीं है। समाजपतियों के कूटनीतिक शतरंज की वह भी खिलाडिन है। उसकी पैनी सूझ का लोहा सभी मानते है।"[4] यहाँ पर हम कह सकते हैं कि राजनीति में पुरूषों के खंदे को खंदा मिलाकर चलने वाली ग्रामीण समाज में स्त्रियाँ है, जो अपनी कुशलता से राजनीति में प्रभाव दिखा रही है।

ग्रामांचल का विकास होने के लिए ताराचरण जैसे लोगों के नेतृत्व की जरूरत है। क्योंकि इन्हीं के कारण ही विकास की धारा तेज बनेगी। ताराचरण किसानों का नेता बन गया। उसने चाची को अखबार पढ़कर देश में घटीत घटनाओं से अवगत कराया। डॉ. सुरेश बत्रा के अनुसार, "नागार्जुन की क्रांतिकारी चेतना ने ग्रामीण नारियों को भी राजनीति आन्दोलन में सक्रिय भागीदार बनाया है। उन्होंने 'रतिनाथ की चाची' की अनपढ़ चाची कहती है - "मैं पढ़ी लिखी नहीं हूँ, मगर इतना समझती हूँ कि पच्चीस साल के सवालों ने अपने यहाँ जो नँया संसार बसाया है उसके अंदर जाकर

राक्षसों की बडी फौज भी मात खा जायेगी।''[5] इस प्रकार नारी भी राजनीति में सक्रिय होकर आगे बढ़ सकती है, इस पर प्रकाश डाला है

'बलचनमा' (1952) में राजनीति को लेकर खुद बलचनमा कहता है, ''बच्चू से यह भी मालूम हुआ की फूल बाबू भी मेम्बरी के लिए खडे होंगे। काँग्रेस इसी इलाके के लोगों से वोट दिलवा कर फूलाबाबू को असेम्बली का मेंबर बनाना चाहती है। मैं सोचने लगा, हो सकता हैं कि मेम्बर बन चुकने पर हमारी छोटी मलिकाईन के यही भतीजा बाबू मिनिस्टर भी हो जाये। तब तो हुआ भूचाल! के बाद रिलिफ फंड का रूपैया लेकर यह बाबू साहब हमारी बस्ती में जैसी खैरात बाँट गये थे, तिसरे साल से तुम्हें बता ही चुका हूँ भैया मेरे ऐसे मेम्बर से तो हमारे इलाके का बंटाधार हो जाएगा, पानी में आग लग जाएगी....।''[6] इस प्रकार यहाँ स्पष्ट है कि नेताओं के साथ-साथ कार्यकर्ता भी लालची हो गए है। गंदी राजनीति के कारण नेता, सरकारी अधिकारी, पुलिस कर्मी सामान्य गरीब जनता पर अत्याचार करते है इस बारे में नागार्जुन लिखते है, ''चुनाव में कांग्रेस की भारी जीत हुई थी, अंग्रेजी हाकिमों के बदले अब स्वदेशी मिनिस्टरों की हकूमत कायम होने जा रही थी। सदसैतीस (1937 ई.) के शुरू होते-होते कांग्रेसी जमींदारों के भाई-भाई-बन्द और सार-ससुर पर ताब देने लग गये थे। काँग्रेसराज जमींदारों का ही फायदा करेगा - स्वामीजी की यह बात हमारी रग-रग में समा गयी थी। हम पुलिस को भी समझ रहे थें और जमींदार के लढैतों को भी - जमींदार की शह पाकर पुलिसवाले हमें तरह तरह के मुकदमों में फँसाना चाहते थे।''[7] यहाँ पर काँग्रेसी राजनीतीओं का पर्दाफाश हुआ है। ''स्वतंत्रता मिलते ही गांधी जी ने काँग्रेस को भंग कर देने का सुझाव दिया था किन्तु नेहरू, पटेल आदि नेताओं के कारण गांधी जी का प्रयास असफल रहा।''[8] लगता है काँग्रेस की राजनीति बाद में सत्ताप्राप्ति की नीति बनी। महात्मा गांधी का नाम लेकर चुनाव लडना इसका यह प्रमाण है।

'बाबा बटेसरनाथ' (1954) में आजादी के लड़ाई में जो राजनीतिक उथल-पुथल मच गयी उसी का चित्रण नागार्जुन ने किया है। बटवृक्ष कहता है, ''अपने देश में आजादी की लढ़ाई कई मंजिलों से गुजरती हुई आज की स्थिति तक पहुँची है। राजनीतिक उथल-पुथल का देशव्यापी विराट प्रदर्शन 1921 के अन्त में पहली बार हुआ। 'प्रिन्स ऑफ येल्स' को बडे-बडे शहरों में घुमाया गया था। शाही स्वागत उसका हुआ नहीं, हाँ विरोध प्रदर्शन अवश्य हुए। ब्रिटीश साम्राज्य के प्रति भारतीयों के अंदर जो विक्षोभ घुट रहा था उसका इजहार इतने जोरों में हुआ की विलायती तानाशाही

बुरी तरह घबरा उठे और दमन की चक्की दस गुणी रफ्तार से चला दी। गांधी जी अपने लेखों, वक्तव्यों और भाषणों से उस व्यापक जनक्षोभ को ठण्डा करने की कोशिश करते रहे -- अन्त उबकर उन्होंने कहा कि उन्हें 'स्वराज्य' शब्द से भी चीड़ हो गयी है।''[9] ब्रिटीश काल के राजनीति के दर्शन कुछ इस प्रकार होते है - ''नील के कारखानेदार साहबों की तरफदारी में पहले तो सरकार तन गयी परंतु पीछे उसे झुकना पड़ और इस चम्पारन की जनता को नील - दानवों से छूटकारा मिला। चार वर्षबाद असहयोग-आन्दोलन छिडा, तो गांधी की कीर्ति में मानों पंख लग गये।''[10] गांधीजी के राजनीति के पद्धति पर सर्वेश्वरदयाल सक्सेना कहते है, ''मैं जानता हूँ क्या हुआ तुमारी लंगोटी का, उत्सवों में अधिकारियों के बिल्ले बनाने के काम आ गयी और तुम्हारी लाठी, उसी को टेककर चल रही है। एक बिगडी दिमाग डगमगाती सत्ता।''[11]

इस प्रकार प्राचीन काल से आज तक राजनीति को अनन्य साधारण महत्त्व है। राजनीति के बलबुते पर ही शासन प्रणाली चलती है। लेकिन आज देश की राजनीति और नेता भ्रष्ट हो गए है। नेता अपने स्वार्थ के लिए सत्ता का गलत प्रयोग कर रहे है। सत्ता हथियाने के लिए गलत मार्गों को अपना रहे है जिससे हमारे देश की राजनीति खोखली होती जा रही है। यहाँ स्वातंत्र्यपूर्व की राजनीती और परवर्ती राजनीती के दर्शन होते है। आंदोलन, हडताल, जुलूस के सहारे यह विक्षोभ प्रकट होता था। नागार्जुन ने गांधीजी के प्रभाव का यथार्थ चित्रण किया है।

4.2.2 अवसरवादी नेता :-

भारतीय राजनीति का दूसरा अंग है नेता। दल के महत्त्वपूर्ण व्यक्ति को 'नेता' कहा जाता है। नेता और कार्यकर्ता से राजनीतिक दल बनता है। आजादी के पहले आदर्श नेता रहे परंतु सत्ता प्राप्ति के बाद सेवा की जगह सत्ता, पद, धन, मान-प्रतिष्ठा पाने की होड लगी, जिसमें अवसरवादी नेताओं का निमार्ण हुआ। अवसरवादी नेता वे है जो अपने लाभ के लिए देशहित न सोचते हुए अपना हित देखते है। अवसर की प्रतीक्षा करनेवाले ऐसे नेता आज सभी ओर दिखाई देते रहे है। देश के महामंत्री से लेकर राज्य के शासक तक यही हाल है। नागार्जुन ने अपनी रचना में राजनीति पर प्रकाश डालते हुए अवसरवादी नेताओं की पोल खोली है। ऐसे नेता लोग देश के लिए हानिकार है परंतु आज उनकी चलती है यही कटू सच्चाई है।

अगस्त 1947 को हमारे देश को आजादी मिली। आजादी के बाद अपनी सरकार आयी। सरकार ने जनतांत्रिक शासन प्रणाली को अपनाया और उसके अनुसार कारोबार शुरू किया। किन्तु

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR.

सरकार के साथ-साथ भ्रष्ट नेताओं का भी आगमन हुआ। राजनीति को स्वार्थी और अवसरवादी नेताओं ने अपने स्वार्थ के लिए भ्रष्ट कर दिया। उन्होंने सत्ता का प्रयोग धन कमाने के लिए किया। यह अवसरवादी नेता मौंका देखकर एक दल से दूसरे दल में जाने लगे। अत: यहाँ पर उनकी दलबदलू नीति उभर आती है। वे लागों को झूठे आश्वासन देकर चुनाव जीतते थे। इन भ्रष्ट नेताओं की वजह से लोगों के सपने, आशा-आकांक्षाएँ, कल्याणकारी कार्यो पर पानी फेरा गया। नेताओं की वजह से भारतीय ग्रामीण समाज व्यवस्था में विकास नहीं हुआ है। ऐसे अवसरवादी नेताओं के कारण सामान्य लोगों का शोषण हो रहा है। यह अवसरवादी नेता अपनी कुर्सी पीढ़ी-दर-पीढ़ी खुद के ही घर में रखने की कोशिश करते है। इस संदर्भ में धूमिल कहते है, ''हाँ यह सही हैं कि कुर्सियाँ वही है, सिर्फ टोपियाँ बदल गई हैं।''[12] यह कथन आज की राजनीति पर करारी चोट है।

'रतिनाथ की चाची' (1948) में नागार्जुन ने अवसरवादी नेता और गरीब किसान वर्ग के संघर्ष को चित्रित किया है। नागार्जुन कहते है, ''पडोस के एक दूसरे छोटे जमींदार ने राजा बहादूर के शुभंकरपुरवाले सारे खेत लिखा लिये। किसानों के संघर्ष को अवसरवादी नेता चौपट कर चुके थे। मुकदमा लडते-लडते उन बेचारों का बुरा हाल हुआ।''[13] यहाँ पर स्पष्ट है कि अवसरवादी नेता अपने स्वार्थ के लिए गरीब किसानों का शोषण करते है।

'बलचनमा' (1952) में बलचनमा मिनिस्टर का मतलब नहीं समझता। वह बच्चू से पूछता है तब उसे पता चलता है कि यह जमींदार लोग काँग्रेसी बनकर किसानों को ठगते है यही इन अवसरवादी नेताओं के प्रवृत्ति होती है। बलचनमा कहता है, ''अब मेरी समझ में आ गया कि मिनिस्टर का क्या मतलब होगा ? स्वामीजी ने कहा था कि जमींदार लोग काँग्रेसी बनके किसानों को ठगते फिरते है। मेरा माथा ठनकने लगा कि ये ही जब मिनिस्टर हो जायेंगे तो गरीबों की भलाई होगी इनसे या बडे -बडे बाबू लोगों की।''[14] बलचनमा आम आदमी का प्रतिक है उनका यह बयान सच्चे भारतीय का है। आज भी सभी यही प्रश्न उठाते है कि नेता के कारण देश का विकास होगा ? लगता है नहीं। विकास जनता का नहीं नेता का होता है, क्योंकि नेता अवसर की प्रतिक्षा में रहता है और उसका लाभ उठाता है। सुभद्रा पैठणकर के शब्दों में, ''राजनेताओं की निष्क्रियता, अदूरदर्शिता, स्वार्थ लिप्सा, तथा अपने अस्तित्व (कुर्सीवादी) की रक्षा के कारण आज भारतीय प्रजातंत्र असफलता के दरवाजे खटखटा रहा है।''[15]

'बाबा बटेसरनाथ' (1954) में नागार्जुन ने बटवृक्ष के माध्यम से अवसरवादी नेताओं की नीति चित्रित की है। जिन नेताओं ने आजादी हासिल करने के लिए अपना सर्वस्व दाँव पर लगाया आज वही नेता अवसरवादी नेता बन बैठे है, दोनों हाथों से जितना भ्रष्टाचार किया जाए उतना कर रहे है। आजादी देश कों मिल या अवरसवादी नेता आजाद हुए यहीं प्रश्नचिह्न हैं। इस संदर्भ में बाबा बटेसरनाथ कहते हैं, "आजादी ! छी ! आजादी मिली है हमारे उग्रमोहन बाबू को, कुलानन्ददास को कांग्रेस की टिकट पर जो भी चुने गये हैं उन्हें मिली है आजादी। सक्रेटेरियट के बडे साहबों को भी आजादी का फायदा पहुँचा है।"[16] देश तथा आम आदमी स्वतंत्र नहीं हुआ है क्योंकि अब अंग्रेज नहीं मगर काले नेताओं का राज है, आतंक है।

अंत में हम कह सकते हैं कि वर्तमान राजनीति में भ्रष्ट, चरित्र्यहीन, अवसरवादी नेता आए हैं। उनमें नैतिक मूल्य का अभाव है। इसलिए वे अपने स्वार्थ के लिए अवसर देखकर गिरगिट की तरह रंग बदलते है लेकिन इसका बुरा असर समाज व्यवस्था पर पडता है। शायद इसी वजह से आज ग्रामीण समाज जीवन पिछडा हुआ है ऐसा मुझे लगता है। अवसरवादी प्रवृत्ति ने घर-घर में दरारें पैदा की, परिवार टूटे, गाँव बँटा, संघर्ष को बढ़ावा मिला, इसका कारण अवसरवादी नेता ही है।

4.2.3 चुनाव :-

15 अगस्त 1947 को देश आजाद हुआ। आजादी मिलने के बाद देश में राजनीति के बीज बोए गए । उसका वटवृक्ष बना परंतु वह आज अंदर से खोखला हुआ है। नेताओं ने जनतांत्रिक शासनप्रणाली को स्वीकार किया और उसके अनुसार चुनाव प्रक्रिया शुरू हुई। बहुत सारे दल बने। सत्ता हासिल करने के मोह में राजनीतिक दलों ने अपने-अपने उम्मीदवार खडे किए। चुनावी माहोल शुरू हुआ। राजनीतिक दल चुनाओं पर लाखो रूपये खर्च करने लगे। सिर्फ पैसे ही नहीं तो दौरे, प्रचार, सभाओं का आयोजन करने लगे। आज तो चौराहें-चौराहें पर बहुत लम्बे-चौडे नेताओं के पोस्टर, बॅनर लगे होते है। शुरू-शुरू में यह चुनाओं का माहोल नगरों में ज्यादातर दिखाई पडता था लेकिन धीरे-धीरे ग्रामीण समाज व्यवस्था में परिवर्तन होता गया और चुनावी माहोल छोटे-छोटे ग्रामों तक फैल गया। इस प्रकार देहातों में भी राजनीति की जड़े जमने लगी। देहातों में भी बहुत सारे राजनीतिक दल हुए। राजनीतिक या चुनाव के कारणों से देहातों में लोग एक-दूसरे के दुश्मन भी बन गए। पंचायत राज्य के चुनाव में दिन-रात लोग अपने-अपने उम्मीदवारों का प्रचार करते फिरते थे। इन कारणों से देहातों में जो सुख-शान्ति थी वह नष्ट हो गयी। एकता, सामंजस्य,

अपनापन, भाईचारा न रहकर लोग एक-दूसरे के खून पर उतर आए। राजनीतिक चुनावों के कारण ग्रामों का सामाजिक जीवन ही बिगड गया। ''राजनीति के सारे रोंगटे, जो चुनाव की गुदगुदी से खडे, बडे हो गये थे, वे यथावत हो गये है, भाषणों की बन्दूके, घोषणा की तलवारे और आश्वासनों के कवच सज्जित, अभी अभी तक जो योद्धा थे, शायद तथागत हो गए।''[17] यहाँ पर स्पष्ट हैं कि नेता लोग चुनावों के वक्त जो वोटों की भीख माँगकर विकास योजनाओं के बारे में जो आश्वासन देते है वे चुनाव के बाद भूल जाते है, उनकी कथनी और करनी में अंतर आ जाता है। चुनावाओं के कारण ग्रामीण जनजीवन पर कैसे असर पडा है, उसका यथार्थ चित्रण नागार्जुन ने अपने उपन्यासों में किया है।

'रतिनाथ की चाची' (1948) में नागार्जुन ने चुनाव के वक्त नेता विकास योजनाओं के बडे बडे वादे करते है पर निभाते नहीं है इसका चित्रण किया है। वे लिखते है - ''बार-बार आगा-पीछा सोचकर कांग्रेस ने जब प्रान्तों के शासन में हाथ बँटाना स्वीकार कर लिया तो जनता ने युग की ओर नई आशा से देखा। मिनिस्टरी कुबूल कर लेने पर नेताओ का उत्तरदायित्व बेहद बन गया। चुनाव के समय उन्होंने बडे-बडे वादे किये थे।''[18] जमींदार और कांग्रेसी नेताओं के बीच चुनाव को लेकर संघर्ष किस तरह पनपता है? इसका भी नागार्जुन चित्रण करते हुए कहते है, ''जमींदार चुनाव में हार कर अपने अंधकारमय भविष्य की कल्पना करते कुछ कछुए की भाँति दबुके पडे थे। अन्दर-ही-अन्दर कुछ सोचकर अपने पैंतरे बदल डालने का उन्होंने निश्चय किया था। परम्परा की दुहाई देकर कांग्रेसी मंत्रियों को उन्होंने धमकी दी - आपका खादी का कुर्ता पहले हम अपने खून से तर कर देंगे, उसके बाद जाकर जमीदारी प्रथा उठा दीजिए।''[19] यहाँ पर कांग्रेसी नेता जमींदारी प्रथा को नष्ट करने के मुद्दे पर चुनाव जितना चाहते है लेकिन जमीनदार वर्ग भी इनसे संघर्ष करने में पीछे नहीं हटता वोट का स्थान नोट ने बँलेट का स्थान बुलेट ने लिया यही शोकांतिका है।

'बलचनमा' (1952) में चुनाव के संदर्भ को लेकर बलचनमा और बच्चू के बीच जो वार्तालाप होता है। उसका चित्रण करते हुए बलचनमा कहता है, ''मलिस्टर नहीं, मिनिस्टर। .... वह हँसकर बोला -कानून - कायदा को अमल में लाने के लिए मामूली हाकिमों की देखभाल के लिए और मुलुक की सरकार को चलाने के लिए मेम्बर लोग अपने में से जिन दस-पाँच आदमियों को मुखिया चुनते है वे ही मिनिस्टर कहलाते हैं। समूचा मुलुक होट देकर लाखो करोडों में से सैंकडों को मेम्बर चुनते है। सैंकडों मेम्बर अपने में से दस-बीस पर सारा काम चलाने की जिम्मेदारी सौंप देते है, फिर उन्हीं के आडर के मुताबिक लोग सबकुछ करते है।''[20] यहाँ पर स्पष्ट है कि मिनिस्टरों को

चुनने के लिए चुनावी प्रक्रिया की जाती है जिसमें जो उम्मीदवार चुनकर आते है उनपर सरकार चलाने की जिम्मेदारी सौंपी जाती है। उन्हीं के आदेशों पर लोग अपना-अपना काम करते है। देश में बड़ा दल काँग्रेस थी। जिसे वहाँ लाभ नहीं होता वे दूसरे दल में जाते। यह नेताओं की दल बदलू प्रवृत्ति का प्रमाण है, आज भी यहीं हाल है।

'बाबा बटेसरनाथ' (1954) में जीवनाथ और जैकिसुन दोनों के बीच चुनाव में किस पार्टी को वोट देना चाहिए इस पर चर्चा चली है। वे कहते है, ''और इसलिए पिछले चुनाव में जीवनाथ ने एक वोट कांग्रेस को दिया और दूसरा (पार्लियमेण्टवाला) सोशालिस्ट पार्टी को । वोट के बारे में अपनी यह राय उसने साथियों से भी बता दी थी। खुल्लमखुल्ला सोशालिस्ट पार्टी को वोट देना चाहिए जैकिसुन की राय तो यही थी, लेकिन जीवनाथ उससे सहमत नहीं था।''[21] यहाँ पर वोट किस पार्टी को दे देना चाहिए इस पर भैंहस चली है। डिप्टी मिनिस्टर होने के लालच में उग्रमोहन बाबू रूपउली ग्राम में वोट भिक्षा के लिए गये थे। जिसका चित्रण देखिए - ''पिछले एलेक्शन में प्रादेशिक कमेटी के एक ग्रुप ने हल्की-सी मुलाखत ही की तो उग्रमोहन वापस आये। डिप्टी मिनीस्टर होने का चांस था, मखोल तो कोई था नहीं। वोटिंग से चार छः रोज पहले वह रूपउली भी आये थे, द्वार-द्वार पर हाथ जोडकर लोगों से 'भोंटभिक्षा' माँगी थी।''[22] लेखक ने यहाँ पर नेताओं के भिकारी रूप को चित्रित किया है। ''राजनीति और राजनीति के कर्णधारों पर किये गए नागार्जुन के व्यंग्य तिलमिलाने वाले होते हैं। उन्हें जो कहना होता है, बिना लाग लपेट के कह जाते हैं।''[23] यहाँ पर नेता को एक भिखारी के रूप में दिखाकर एक प्रकार से नेताओं पर व्यंग्य ही कसा है।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि आजादी के बाद राजनीति के कारण सामाजिक परिवर्तन हुआ जिसके अंतर्गत देश में होनेवाले चुनाव और उनके घिनौने दर्शन मिलते है। आज सभी दल में भ्रष्ट चारित्र्यहीन नेताओं की होड हैं, दल और पार्टी ऐसे ही नेताओं को टिकट दे रही है। चुनाव प्रचार में दौरे, सभा आदि का खुल्लम खुल्ला आयोजन किया जाता है। इन सभाओं मे विपक्ष दलीय नेता एक दूसरे की धज्जियाँ उडाते हैं एक दूसरे पर घिनौने आरोप-प्रत्यारोप करते है। उस तरह नेता गरीब ग्रामीण जनता को फसाकर चुनाव जीत जाते है। वोट की निलामी, कत्ल, हत्या, अपहरण जैसी हीनता को अपनानेवाले नेता देश का क्या विकास करेंगे? यही यथार्थ है।

4.2.4 राजनीति सत्ता प्राप्ति का साधन :-

देश को आजादी मिलने के पश्चात राजनीतिक घटनाओं ने सामाजिक जीवन को विशेष रूपसे आंदोलित किया है। देश में हमारी अपनी सरकार आने पर उसने संविधान बनाया और उसके अनुसार देश का कारोबार शुरू हुआ लेकिन राजनीति में भ्रष्ट और चारित्र्यहीन नेता संपत्ति और गुंडागिरी के बल पर आगे आते है। स्वातंत्र्यपूर्व काल में जिन्होंने देश के लिए अपना सर्वस्व का दान किया उनमें से कई नेता आजादी के पश्चात स्वार्थी और भ्रष्टाचारी बन गए। ऐसे स्वार्थी, भ्रष्ट नेताओं ने अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए और सत्ता को बनाए रखने कें लिए बेईमानी, भ्रष्टाचार को अपनाया। सत्ता हासिल करने के लिए धर्म एवं जाति के नाम पर वोटों की माँग करना, वोटों को खरीदना, विपक्ष के नेता को लालच दिखाकर अपने पक्ष में लेना आदि जैसी काली करतूतों को अपनाया। सत्ता प्राप्ति की हवस पूरी करने के लिए 'राजनीति' को ही अपनी कर्मभूमि इन भ्रष्ट नेताओं ने अपनायी। राजनीतिक सत्ता के जरिए सामान्य ग्रामीण जनता का शोषण करना तो उनका पेशा ही बन चुका था। 'राजनीति' में रहकर वे लोग मनचाहा बर्ताव करते थे और इसी हथियार से गरीब जनता का गला भी घोंटते थे। राजनीति में रहकर इन लोगों ने 'शिक्षा' जैसे पवित्र क्षेत्र को अपवित्र बनाया। राजनीतिक सत्ता से ये लोग देश का विकास छोडकर खुद का ही विकास कर रहे है। इस कारण ग्रामों की स्थिति ज्यों कि त्यों रही है। इस पर प्रकाश डालाते हुए सर्वेश्वरदयाल सक्सेना लिखते है, ''रो गाकर आजादी लाए, लंगोटी खादी, चार कदम भी चल नहीं पाए, इतनी बढ़ गई बादी। अमरीका डांस करे और रूस में मारे कुश्ती, देखो अपने नेताओं कि, यारों धींगा मुश्ती, रंग खरबुजे की महक खरबूजे की।''[24] आज चुनाव, राजनीति फिर सत्ता प्राप्ति का साधन बनी है।

'रतिनाथ की चाची' (1948) में नागार्जुन ने शंभुकरपुर ग्राम में राजनीति को सत्ता हथियाने का साधन बनानेवाले भ्रष्ट नेताओं का पर्दाफाश किया है। किस तरह नेता लोग चुनाव जीतते है और अपने वादों से किस तरह मुखरीत होते है यह बताने का प्रयास लेखक ने किया। इन भ्रष्ट नेताओं ने राजनीति को केवल सत्ता हासिल करने का साधन माना है। लेखक कहते है, ''मिनिस्टरी कुबूल कर लेने पर नेताओं का उत्तरदायित्व बेहद बढ़ गया। चुनाव के समय उन्होंने जो जनता से बढ़े-बढ़े वादे किये थे।''[25]

'बलचनमा' (1952) में नागार्जुन सेठ, साहूकार, राजनीतिक सत्ता के माध्यम से आजादी के बाद क्या-क्या हासिल करना चाहते थे इसका ब्योरा देते हुए लिखते है - 'गांधी महात्मा सरकार को झुकाना चाहते थे। चाहते थे की दो-चार बातें उनकी मान ले सरकार। गोरी सरकारी अपनी जिद् पर अडी हुई थी। कलकत्ता, बम्बई के सेठ साहुकार भी भीतर की स्वराज्य होने से सबसे जास्ती भलाई उन्हीं की होगी। वे देख रहे थे, सरकार झुक्ती है तो सुराज मिलता है। स्वराज मिलता है, तो अधिक से अधिक वे कारखाने खडे कर सकते है। अभी जो देश को दूहकर सारी धनसंपदा अंग्रेज ले जाते है, स्वराज होने पर वह सब सीधे उनके खजाने में आने लगेगी ...... सन तीस-बत्तीस का जमाना था।''[26] यहाँ पर सेठ साहूकार राजनीतिक सत्ता के माध्यम से क्या-क्या हासिल कर सकते है यह दिखाया है। कामेंद्र बाबु के ससुर एक नेता थे वे अपनी बेटी कनक किशोरी को आगे चलकर राजनीति में लाना चाहते है, ''कामेंद्रबाबु का ससुराल छपरा के देहात में था। ससुर नेता थे, लडकी को गाँधीजी के आश्रम में रहकर पढ़ लिख रही थी। आगे चलकर उन्हें लीडरानी बनाना था। उनका एक फोटो कामेंद्रबाबू के रहने के कमरे मे था। सूखा चेहरा, धँसी आँखें, पिचके गाल सामने चरखा पडा था। नाम था कनक किशोरी।''[27] यहाँ पर पिता अपनी बेटी को राजनीति में लाना चाहते है। कुल परम्परा यह भारतीय राजनीति को शाप है। परिणामत: सच्चे लोगों की उपेक्षा होती है। आज भी यही राजनीति का हाल है।

'बाबा बटेसरनाथ' (1954) में नागार्जुन ने राजनीति सत्ता प्राप्ति का साधन है इसे तिखे व्यंग्यात्मक तरीके से प्रस्तुत किया है जैसे - ''आजादी ! छी ! आजादी मिली है, हमारे उग्रमोहन बाबू को, कुलान्ददास को .... कांग्रेस की टिकट पर जो भी चुने गये है, उन्हें मिली है आजादी। मिनिस्टरों को सो और उँचे दर्जे की आजादी मिली है। सेक्रेटेरियट के बडे साहबो को भी आजादी का फायदा पहुँचा है।''[28] ''1930 के बाद से देश में क्रांतिकारी उभार साफ दिखाई दे रहा था, क्योंकि कांग्रेस का ध्यान राजनीतिक स्वतन्त्रता की ओर ही था। राष्ट्रीय दृष्टी से, हिन्दुस्तान की राजनैतिक स्वतंत्रता की समस्या पर विशेष रूप से केन्द्रित थी, हिन्दुस्तान के सामाजिक - आर्थिक पुनर्निर्माण पर कम।''[29] यहाँ पर स्पष्ट है कि राजनीति सिर्फ सत्ता हथियाने का साधन है न की आर्थिक और सामाजिक पुनर्निर्माण उन्नति का।

यहाँ पर हम कह सकते है कि, देश को आजादी मिलने के पश्चात राजनीतिक घटनाओं ने सामाजिक जीवन को विशेष रूप से आंदोलित किया। स्वतंत्रतापूर्व काल में जिन्होंने देश के लिए

अपना सर्वस्व का अपर्ण किया था। आज वे ही नेता स्वार्थी, भ्रष्टाचारी बने हुए है। धनसम्पत्ति और गुंडागर्दी के बल पर चुनाव में जीते है। राजनीति को सत्ता प्राप्ति का साधन मान बैठे है न कि देश के विकास, प्रगति का। राजनीति के माध्यम से देश का विकास तो नहीं कर रहे है मगर खुदका ही विकास कर रहे है, भ्रष्टाचार उनमें कूट-कूट कर भरा हुआ है।

महात्मा गांधी का नाम लेना, पोस्टर छपवाना, प्रतिमा का पूजन करना, टोपी पहनना, खादी पहनना आदि राजनीति के आयाम है जिसमें कौओ बगुला बने, वामन विराट हुआ - पापी धर्मात्मा हो गया यह सब राजनीति का फल है। सत्ताप्राप्ति यही मुक्तिद्वार है। यही सच है। नागार्जुन जैसे मार्क्सवादीने इसपर गहराई में सोचा है ऐसा लगता है।

4.2.5 ग्रामीण जीवन में वर्तमान राजनीतिक स्थिति :-

सामाजिक जीवन पर प्रभाव डालनेवाले प्रमुख स्त्रोतों में राजनीतिक पक्ष का विशेष महत्त्वपूर्ण स्थान है। देश को आजादी मिलने के पश्चात राजनीतिक घटनाओं में विशेष परिवर्तन हुआ है। सरकारने संविधान बनाया और उसके अनुसार देश का कारोबार शुरू किया। लेकिन नेताओं की स्वार्थी प्रवृत्ति के कारण राजनीति का स्वरूप पूरी तरह से बदल गया। उसमे भ्रष्ट और चारित्र्यहीन नेताओं ने प्रवेश किया । सत्ता हाथ में आते ही वे बदल गए। सम्पत्ति और आतंक के बल पर इन नेताओं ने राजनीति को अपने हाथ की कटपुतली बनाया। आजादी के पहले जिन लोगों ने अपना सर्वस्व दाँव पर लगाया, उनमें से कहीं नेता आज स्वार्थी और भ्रष्टाचारी बन गये है। वर्तमान राजनीति में भ्रष्ट नेताओं ने अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए, सत्ता को बनाए रखने के लिए बेइमानी, भ्रष्टाचार, जैसे हथियार अपनाए। आज यह नेता लोग सत्ता पाने के लिए न जाने कैसे-कैसे हथकण्डों का इस्तमाल कर रहे है जैसे की धर्म और जाति के नाम पर वोटों की माँग करना, विपक्ष के नेता को लालच दिखाकर अपने पक्ष में लेना, वोटो को खरीदना आदि।

वर्तमान में नेता जनता के सामने सुख-सुविधाओं देना, गरीबी हटाना, आर्थिक स्थिति में सुधार करना तथा सुजलाम सुफलाम राष्ट्र को बनाना आदि आश्वासन देते हैं। वे केवल नारें लगाते है, लेकिन करते कुछ नहीं है। उनकी कथनी और करनी में अंतर होता है। इस संदर्भ में सुभद्रा पैठणकर लिखती है, ''आज की राजनीति हर बार जनता में आशायें बंधाती है, वायदे करती है, पर वायदों का अन्त 'लाटरी' के टिकटोंवाला होता है। राजनीति के दाँव-पेंच बडे विचित्र होते है।''[30] वर्तमान राजनीति के भ्रष्ट स्वरूप के बारे में डॉ. रमेश देशमुख लिखते है - ''देश में बहुमुखी राजनीति

का पतन हुआ है, उससे नैतिकता के सभी मूल्य ध्वस्त कर दिए।''[31] इस प्रकार देश की राजनीति को खोखला करने का काम भ्रष्ट नेता, अवसरवादी नेता, दलबदलू नेताओं ने किया है। सरकार ने ग्रामीण जनता के लिए अनेक प्रकार की योजनाएँ और प्रकल्पों को चलाया लेकिन इस योजनाओं को बीच में ही इन भ्रष्ट नेताओं ने हडप किया। इसलिए ग्राम और सामान्य लोग इनसे वंचित रहे। आज की स्थिति ज्यों की त्यों रही है।

'रतिनाथ की चाची' (1948) में नागार्जुन ने शुभंकरपुर ग्राम के राजनीति को चित्रित किया है। चुनाव के समय नेता लोग बडे बडे वादें करते है, आश्वासन देते है, नोट लगाते है, घोषणाएँ देते है लेकिन चुनाव जितने के बाद अपने वादों से मुखरते हैं यही स्थिति वर्तमान राजनीति में चली है। इस पर लेखक लिखते है, ''मिनिस्टरी कुबूल कर लेने पर नेताओं का उत्तरदायित्व बेहद बढ़ गया है, चुनाव के समय उन्होंने जो जनता से बडे बडे वादे किए थे।''[32] 'बलचनमा' मे कामेंद्रबाबू के ससुर अपनी बेटी को राजनीति में लाना चाहते है, एक दृष्टव्य - ''कामेंद्र बाबू का ससुराल छपरा के देहात में था। ससुर नेता थे, लडकी को गांधीजी के आश्रम में रखा कर, पढा-लिखा रहे थे। आगे चलकर उन्हें लीडरनी बनाना था।''[33] यहाँ पर स्पष्ट हैं कि वर्तमान राजनीतिक स्थिति में नेता लोग राजसत्ता या कुर्सी हमेशा अपने ही घर में रहनी चाहिए इसलिए परिवार के सदस्यों को भी राजनीति में लेते है। राजनीति विरासत बनी है ऐसा लगता है।

'बाबा बटेसरनाथ' (1954) में ग्रामीण जीवन में स्थित वर्तमान राजनीतिक स्थिति का जायजा लेते हुए वटवृक्ष कहता है, ''तेरा चेहरा क्यों उतर आया है बेटा ? बौडम कहीं का ! क्या सोचता हैं कि वह जालीम जमाना फिर वापस आ जाएगा लौटकर ? हः हः हः हः ।।, नहीं रे नहीं। तू जिस युग में पैदा हुआ है वह राजाओं -जमींदारों और सेठों साहूकारों का युग नहीं बल्कि तेरे जैसे आम नौजवानों का जमाना है।''[34] यहाँ पर बाबा बटेसरनाथ जैकिसुन को पुराने राजनीतिक माहोल से वर्तमान राजनीतिक माहोल की स्थिति के बारे में समझाता है।

यहाँ पर स्पष्ट है कि देश को आजादी मिलने के बाद राजनीतिक घटनाओं मे परिवर्तन हुआ। वर्तमान राजनीति में भ्रष्ट नेताओं ने अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए, सत्ता को बनाए रखने के लिए बेईमानी, भ्रष्टाचार, अनीति, जैसे हथियार अपनाये। वर्तमान में ये भ्रष्ट नेता गरीबी हटाने, आर्थिक स्थिति में सुधार करने तथा विकास योजनाओं को चलाने का आश्वासन देते है मगर करते कुछ नहीं। याने की उनकी कथनी और करनी में अंतर है। नागार्जुन ने उस समय की ग्रामीण राजनीतिक

परिस्थितियों को यथार्थता के साथ चित्रित किया है। यह बात सही भी हैं क्योंकि कोई भी सजग साहित्यकार अपने समय की राजनीतिक परिस्थिति से अछूता नहीं रह सकता ऐसा मुझे लगता है।

राजनीतिक प्रवृत्ति में परिवर्तन होना समय के अनुसार लगता है । आजादी के पश्चात राजनीतिक उथल-पुथल में देश की जनता तथा नेता है। दल बनते गए, बिगडते गए, कार्यकर्ता नेता बने, नेता चल बसे। देहल्ली की राजनीति गल्ली में पहुँची, हिरो नायक - नेता खलनायक बन बैठे विकास के नाम पर विराणों का निर्माण होने लगा, खान-खदान हो या नहर निर्माण सडक निर्माण हो या औद्योगिकरण हो सभी क्षेत्रों में यही राजनीति अपना बेडा स्थिर कर चुकी है। नागार्जुन की रचनाओं में इसका चित्रण हुआ है। परंतु इस दिशाहीन राजनीति से ग्रामजीवन ध्वस्त हो रहा है।

जमींदार, सरकारी अफसर धार्मिक नेताओं का राजनीति में खुलकर प्रवेश हुआ है, तो दूसरी ओर ग्रामीण जनता उनके आतंक से ड़र से राजनीति से दूर रही है। न चुनाव की जानकारी है न सरकार की। परिणामत: ऐसे नेता अपना वारिस खुद ही चुनते है। अत: घर का एक सदस्य नेता बने तो 'कुर्सी' कहीं ना कहीं घर में ही रहती है । पीढ़ि-दर-पीढ़ि यहीं चलता आया है। नागार्जुन ने विशेषत: काँग्रेस की इस नीति की आलोचना की है। मजदूर नेता नहीं बल्कि शोषित है, किसान उपेक्षित, दलित अछूत, नारी महत्वहीन है। ऐसी राजनीतिक दशा पर नागार्जुन ने गहराई से सोचा है, ऐसा लगता है।

4.2.6 राजनीतिक शोषण :-

प्राचीन काल से आज तक ग्रामीण जनता का राजनीति शोषण होता आया है। प्राचीन काल में राजा अपनी प्रजा का राजनीतिक शोषण करता था। भारतीय ग्रामों के लोग अज्ञानी, अशिक्षित है। उनके अज्ञान के कारण ही उनका शोषण होता है। राजनीतिक शोषण से ग्रामीण लोगों का जीवन दयनीय बना है। सरकारी अधिकारी ग्रामीण लोगों के अज्ञान, भोलेपन का लाभ उठाकर और अपने अधिकार का आतंक फैलाकर या गलत प्रयोग करके इन लोगों का शोषण करते है। सरकारी योजनाओं और प्रकल्पों की कार्यवाही, जमीन की चकबंदी आदि करते समय और किसानों के सम्बन्धित व्यवहारों में उनका शोषण सरकारी अधिकारी करते है। नेताओं से मिली भगत होने से इनके खिलाफ कोई कार्रवाही नहीं होती। धूर्त, चालाख और पाखण्डी लोग गरीब किसानों के खेत, खलिहान लुटते है, उन्हें झूठे इल्जाम में फँसाकर उनकी पिटाई करते है। असहाय, अभावग्रस्त महिलाओं की मजबूरी का लाभ उठाकर उनका शोषण किया जाता है। परन्तु पुलिस कर्मी और उनमें मिलिभगत होने के कारण इन चालाक लोगों के खिलाफ कोई कार्रवाही नहीं होती।

समाज में न्याय व्यवस्था का स्थान सर्वोपरी माना जाता है। लोग उसे न्यायदेवता कहकर सम्मान देते है। अपराधियों को सजा देकर समाज में शान्ति प्रस्थापित की जाती है, लेकिन वकील और जज्ज रूपये लेकर सत्य का गला घोंट देते है और इसमें गरीब, असहाय जनता शोषण का शिकार बनती है। भ्रष्ट नेता अपने स्वार्थ और सत्ता को बनाए रखने के लिए भ्रष्टाचार करते है, लोगों को झूठे आश्वासन देते है। घोषणाओं और नोट बाजी से वोट पाकर लोगों के साथ खिलवाड करते है। वे अपने स्वार्थ के लिए कभी-कभी आतंक का तो कभी गुण्डों का भी प्रयोग करते है। ऐसे भ्रष्ट नेताओं को देश और जनता के कल्याण से कोई सरोकार नहीं है इन सब हथकण्डों के माध्यम से नेता लोग गरीब, असहाय, किसान वर्ग तथा सामान्य जनों का शोषण करते है।

सरकारी विकास योजनाएँ कागज पर होती है, भ्रष्ट नेता गरीब ग्रामीण जनता तक नहीं पहुँचने देते। इस संदर्भ में निलिमा सिंह कहती है, ''जी हुजूर आपके राज्य में, हमें जीने के लिये सब कुछ मिल गया है, पेट की आग है, मिलों के पिछवाडे से आता पानी है, आपके चौडे मुँह की धोंकनी से फूटती वायदों की गरम-गरम हवा है और आकाश ? अरे ? सिर के ऊपर तो आकाश ही आकाश है, अब सिर्फ, पाव टिकाने के लिए एक गज जमीन की तलाश है।''[35] आज के राज्य में यह सब सुखसुविधाओं की उपलब्धता होते हुए भी भ्रष्ट नेता कार्यान्वित नहीं कर रहे है। अत: वे एक प्रकार से ग्रामीण जनता का राजनीतिक शोषण ही कर रहे है।

'रतिनाथ की चाची' (1948) में नागार्जुन ने मंत्रियों द्वारा किसानों का किस प्रकार शोषण होता है अथवा उनके द्वारा किसानों की अपेक्षा जमींदारों को महत्त्व दिया जाता है, जमीनदारों के लिए सुख-सुविधाएँ प्राप्त होती है। इस संदर्भ में नागार्जुन लिखते है, ''मंत्रियों ने अपनी पीठ कर दी किसानों की ओर और मुँह कर दिया, जमींदारों की ओर।''[36] यहाँ पर स्पष्ट होता है कि किसानों पर मंत्रियों द्वारा अत्याचार तथा उनका शोषण हुआ है। अवसरवादी नेताओं ने किसानों के संघर्ष को चौपट कर दिया था और उनपर कोर्ट-कचहरी के चक्कर काँटने की बारी आयी थी। इस संदर्भ में, ''पडोस के एक दूसरे छोटे जमींदार ने राजा बहादुर को शुभंकरपुरवाले सारे खेत लिखा लिये। किसानों के संघर्ष को अवसरवादी नेताओं ने चौपट कर चुके थे। मुकदमा लडते-लडते उन बेचारों का हाल करा था।''[37] यहाँ पर स्पष्ट है जमीने हडप करनेवाले यहाँ के नेता ही है।

'बलचनमा' (1952) में किसानों की पीडा तथा राजनीतिक शोषण का चित्रण हुआ है। ''किसान भाइयों, माँगने से कुछ नहीं मिलेगा। अपनी ताकत से ही अपना अपना हक्क आप पा

सकते है। आपकी ताकत क्या है ? एका है, आपकी ताकत संगठन। घर में रोते-रोते अकेले हाय-हाय करते-करते हजारों साल गुजर गये। सरकार को आपकी रत्ती भर भी पर्वाह नहीं है। वह आप लोगों के नहीं चोर डाकुओं से घबडाती है। उन्हें पक्के मकानों (जेलों) में हिफाजत से रखती है। खाने-पीने का, पहनने-ओढ़ने का दवा-दारू का उनके लिए सारा इन्तजाम सरकार करती है। मगर गेहूँ, बासमती पैदा करनेवाले खुद भूखों मरते हैं, सरकार को जरा भी फिक्र नहीं। यह मानो खुद इशारा करती है, किसानों, चोरी करो और डाके डालो तभी तुम्हारा गुजर होगा .....।'[38] यहाँ पर हमें किसानों पर हुए अत्याचार तथा राजनीतिक शोषण का पता चलता है।

'बाबा बटेसरनाथ' (1954) में नागार्जुन ने एक गोरे अंग्रेज द्वारा जीवनाथ पर किए अत्याचार का यथार्थ अंकन किया है। वे लिखते है, ''एक गोरा उनके नजदीक आया और बोला 'कहो अंग्रेज हमारा राज है।' जीवनाथ ने चुप्पी साध ली, तो टॉमी से घूँसा मारकर गिरा दिया था। .... उसके बाद अंग्रेजों की भाषा, अंग्रेजों से जीवनाथ को घोर विरक्ति हो गयी और स्कूल छूट गया।''[39] यहाँ पर अंग्रेजों द्वारा भारतीय सामान्य जनों पर जो अत्याचार हुए तथा उनका जो राजनीतिक शोषण हुआ इसका यथार्थता से चित्रण हुआ है। जमींदारो द्वारा भी किसान, गरीब लोगों पर अत्याचार तथा राजनीतिक शोषण होता रहा है। यहाँ पर जमींदार द्वारा शत्रुमर्दन का शोषण होता है। इस प्रसंग को लेकर एक दृष्टव्य है, 'चींटें हजारों की तादात में शत्रुमर्दन राय की देह पर फैल गये। माथा हिलाकर बेचारे ने बँधे हाथों को ऊपर-ऊपर झटकने की कोशिश की कि पीठ पर कौडे पडे - सपाक- सपाक। चार बार !!'

''खबरदार ! जमादार गरज पडा। अपनी खैर चाहते तो तो वैसे खडे रहो वरना ....।''[40]

यहाँ पर स्पष्ट होता है कि प्राचीन काल से आज तक ग्रामीण जनता का राजनीतिक शोषण होता चला आया है। भारत में ग्रामों के लोग अज्ञानी, अशिक्षित होने के कारण उनका शोषण खुब हुआ है। राजनीतिक शोषण से देहाती लोगों का जीवन दयनीय हुआ है। सरकारी अधिकारी ग्रामीण लोगों के अज्ञान, भोलेपन का लाभ उठाकर और अपने अधिकार का आतंक फैलाकर इन लोगों का शोषण करते है, उनपर अत्याचार करते है।

शोषक और शोषित का संघर्ष राजनीति है। ग्रामजीवन पर यही हावी है। 18 साल के युवा भी आज नए भारत का निर्माण करने में भूमिका प्रधान है। आज राजसत्ता, पद का डर कम हो रहा है। शिक्षा प्रसार होने के कारण मतदाता सोच रहा है।

नागार्जुन की रचनाओं में आज आदमी राजनीति से दूर है तो जमींदार प्रधान है। आज भी भारत की राजनीति इसी प्रकार की है। इसी वास्तविकता की ओर उन्होंने संकेत किया है। परिणामस्वरूप ग्रामों का विकास धिमा है, या नहीं हुआ है।

4.2.7 भ्रष्ट नेताओं का परदाफाश :-

भारतीय समाज व्यवस्था में प्राचीन काल से आज तक राजनीतिक दल का विशेष महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। प्राचीन काल में प्रजा पर राजा का अधिपत्य था। उनके राजदरबार में भी मंत्री, प्रधान, सेनापति, वजीर, मुखियाँ, सलाहकार आदी के माध्यम से कारोबार चलता था। लेकिन आज देश को आजादी मिलने के पश्चात राजनीतिक दल राजनीति तथा सामाजिक पृष्ठभूमि पर हावी हो गए। सरकार ने संविधान बनाया, जनता प्रधान बनी, जनता अब खुशहाली के सपने देखने लगी। परंतु नेताओं की स्वार्थी प्रवृत्तियों ने राजनीति को कुरेद कुरेद के बरर्बाद कर दिया। राजनीति में भ्रष्ट, चारित्र्यहीन नेताओं ने कदम रखे जिसके कारण आज की वर्तमान राततीति पूरी तरह से भ्रष्ट हुई है। राजनीति में ये नेता अपने धन और गुण्डागर्दी के बल पर आए हैं। इन नेताओं ने राजनीति को सत्ताप्राप्ति का साधन माना। सत्ता को पाने के लिए ये लोग धर्म एवं जाति के नाम पर दंगे फसाद मारकांट, कत्ल जैसे हथकण्डों को अपनाने लगे और तो और वोटों को खरीदकर चुनाव जीतने भी लगे है। इन सबके कारण गरीब ग्रामीण जनता का शोषण हो रहा है। इन नेताओं की क्षमता, अर्हता न होते हुए भी वे जनता पर राज करने लगे है। इस संदर्भ में श्रीमती सरोज यादव लिखती है, ''अंग्रेज शासन चला गया किंतु उसकी जगह पर नेताओं का शासन है, अफसरों के सिट पर अंग्रेज की जगह नेता आ बैठा है। यह बगुला भगत श्वेत खादी धारी नेता कार्यालय के कार्य से अनभिज्ञ जनता की सेवा कम किंतु जनता पर शासन अधिक करते है। गणतंत्र का यह सबसे बडा दोष है कि उनमें योग्यतम व्यक्ति को अधिकार नहीं मिलता। नेता बनने के लिए ढीढता ही एक मात्र योग्यता है।''[41] यहाँ पर स्पष्ट है कि इन नेताओं के योग्यता पर प्रश्न उठाकर इनका पर्दाफाश किया है।

आज नेताओं की भ्रष्ट नीति और सरकारी अधिकारियों की रिश्वतखोरी वृत्ति के कारण सामान्य लोग सुविधाओं से दूर है। अत: ग्रामीण जनता का विकास नहीं हो रहा है। इस स्थिति के लिए जिम्मेदार आज की वर्तमान राजनीतिक व्यवस्था ही है। इस परिस्थिति को लोग बदलना चाहते है। आज लोग शिक्षित और संगठित होकर इस व्यवस्था को समाप्त करने के लिए तैयार है। नेताओं ने किए भ्रष्टाचार, शोषण आदि को जानकर इनकी पोल खोल रहे है। अत: धीरे-धीरे इन भ्रष्ट नेताओं का परदाफाश कर रहे है।

'रतिनाथ की चाची' (1948) में शुभंकरपुर के राजा बहादुर का खेत पडोस के एक दूसरे जमींदारों ने अपने नाम लिखा लिए। किसानों में संघर्ष की ज्वाला भडकने लगी और इसमें कॉंग्रेसी नेताओं ने उसमे घी डालने की कोशिश की लेकिन किसान वर्ग ने इन कांग्रेसी नेताओं की पोल खोलते हुए कहा - "आपका खादी का कुर्ता पहले हम अपने खून से तर कर देंगे, उसके बाद जाकर जमींदारी प्रथा उठा दी जाएगी।"[42] यहाँ पर कॉंग्रेसी नेताओं का किसानों द्वारा पर्दाफाश किया गया है। खादी देशभक्ति गांधीवाद की प्रतिक थी, परंतु वह गद्दारी, रिश्वतखोरी का प्रतिक बली है।

'बलचनमा' (1952) में भ्रष्ट नेताओं या जमींदारों की नीति का पर्दाफाश करते हुए बलचनमा कहता है, "समझा भैया, बीस आदमियों के नाम सव्वा पाँच सौ रूपये की खैरात लिखी गई लेकिन लोगों को मिले सिर्फ दो सौ छ: रूपये।"[43] यहाँ धन कमानेवाले नेता के दर्शन होते है। 'हँसिया हाथ में घास काँटने जा रही थी। नजदीक आकर मेरे कान की तरफ मुँह करके वह फुसफुसाई - "ये लोग जुलम करते है बेटा देते हैं दो और कागज पर चढाते है दस। इमान-धरम सब डूब गया है।"[44] यहाँ पर नागार्जुन ने बलचनमा के माध्यम से इन भ्रष्टाचारी लोगों की पोल खोलने का प्रयास किया है। किसानों ने जुलुस निकालकर नारेबाजी करते हुए भ्रष्ट नेता पर प्रकाश डाला है। वे नारे लगाते है - 'कमानेवाला खायेगा '. इसके चलते - चलते जो कुछ हो। 'इन्किलाब ---- जिन्दाबाद।' 'जमीन किसकी ---- जोते बोए उनकी। 'अंग्रेजी राज ---- नाश हों।' 'जमीनदारी प्रथा --- नाश हो।' 'किसान सभा जिन्दाबाद।' लाल झंडा --- जिन्दाबाद।' इन्किलाब -- जिन्दाबाद।"[45] लगता है जमींदारी प्रथा नष्ट करने के लिए किसान सभा का आयोजन होने से नेताओं में हलचल पैदा होती है। किसान सभा के माध्यम से संगठित किसानों ने ऐसे मतलबी नेताओं का परदाफाश किया है।

'बाबा बटेसरनाथ' (1954) में नागार्जुन ने अवसरवादी तथा भ्रष्ट नेताओं का परदाफाश करते हुए कहा है, "आजादी ! छि ! आजादी मिली है हमारे उग्रमोहन बाबू को, कुलानन्ददास को .... कांग्रेस की टिकट पर जो भी चुने गऐ हैं उन्हें मिली है आजादी। मिनिस्टरों को तो और उँचे दर्जे की आजादी मिली है। सेक्रेटेरियट के बडे साहबों को भी आजादी का फायदा पहुँचा है।"[46] आजादी मिलाने पर इन नेताओं ने भ्रष्टाचार करना शुरू किया। धन कमाने के लिए वे आजाद हो गये।

अत: हम कह सकते हैं कि आजादी मिलने के बाद संविधान बनाया गया। जिसके फलस्वरूप भारतीय जनता खुशहाल जिन्दगी के सपने देखने लगी लेकिन इन नेताओं ने राजनीति का अपने लिए

ही प्रयोग किया। राजनीति में भ्रष्ट और चारित्र्यहीन नेताओं ने कदम रखे। ये लोग राजनीति को सत्ता प्राप्ति का साधन मानने लगे। परिणामत: जनता का शोषण होता रहा। लेकिन आज लोग शिक्षित और संगठित होकर इन भ्रष्ट नेताओं का असली चेहरा समाज के सामने लाने की कोशिश कर रहे है तथा उनका पर्दाफाश कर रहे है। यही सच है जब तक ऐसे नेताओं का पर्दाफाश नहीं होगा तब तक आदर्श नेता, सच्चे कार्यकर्ता का निर्माण संभव नहीं। संपन्न, समृद्ध देश के लिए आदर्श नेता की आवश्यकता है। यही संदेश नागार्जुन ने दिया है तथा राजनीति पिता की विरासत बनाने की हीन प्रवृत्ति की ओर भी संकेत किया है।

4.2.8 राजनीति में परिवर्तन :-

प्राचीन काल से आज तक पीढ़ीदर-पीढ़ी राजनीति में परिवर्तन होते आ रहे है। आज भारतीय समाज व्यवस्था में राजनीतिक दल का महत्त्वपूर्ण स्थान है। राजनीतिक दलों के कारण समाज व्यवस्था में भी परिवर्तन हुआ है। आजादी के पहले अंग्रेजों का राज या हुकूमत थी लेकिन आजादी के बाद हमारी अपनी सरकार आयी। संविधान बना जिसके फल-स्वरूप लोगों की सुजलाम् सुफलाम् भारत देश की ओर निगाहें रही। स्वाधिनता से पहले जिन-जिन नेताओं ने स्वाधिनता प्राप्ति के लिए अपना सर्वस्व निछावर किया वही नेता स्वाधिनता के बाद भ्रष्टाचारी, चारित्र्यहीन बने और दोनों हाथों से जनता को लुटाने लगे। इन नेआतों ने अपने स्वार्थ के लिए राजनीति को ही भ्रष्ट कर दिया। इसी कारण राजनीति का पूरा-का-पूरा ढाँचा ही बदल गया। इन लोगों ने सत्ता प्राप्ति के मोह में लोगों में जात-पात के नामपर दंगे-फसाद करवाए। गाँवों में टूटनता बढने लगी। इस संदर्भ में रामविनोद सिंह का कथन है, ''गाँव में राजनीति के प्रवेश से वैचारिक जागरूकता तो आई है लेकिन आत्मीय परिवेश क्षतिग्रस्त हुआ है। राजनीति के घिनौनेपन ने गाँव के आपसी संबंधों में कटुता बढाई है। गाँव के छद्म आधुनिकता के प्रवेश के कारण गाँवों में राजनीति का अपराधीकरण हुआ है।''[47] यहाँ पर दिन-ब-दिन राजनीति में परिवर्तन आने के कारण ग्रामीण जीवन किस प्रकार तितर-बितर हो गया है इसके दर्शन होते है। डॉ. सुभद्रा पैठणकर के शब्दों में, ''दानवता एक बार फिर तांडव नृत्य करने लगी। स्वतंत्रता की प्रेरक शक्तियाँ असहाय होकर बिखर गयी। जमीनदारियाँ टूटी तो प्रायमरी पास जमीनदार स्कूलों और कालेजों के संस्थापक बन बैठे और एम.ए. पास प्राथमिक शालाओं के शिक्षक राजाओं का राज्य टूटा तो वही राजा एम.एल.ए. और मिनिस्टर बन गये।''[48] यहाँ सामाजिक परिस्थितियों के साथ-साथ राजनीतिक परिस्थितियों में भी बदलाव आते गए यह स्पष्ट होता है।

इस प्रकार बदलते हुए समाज के साथ राजनीति में भी परिवर्तन आने लगा। राजनीति का पूरा स्वरूप ही बदलने लगा है। राजनीतिक दल सत्ता हथियाने के लिए भ्रष्ट और चारित्यहीन नेताओं को टिकट देने लगे है। ये नेता लोग धर्म और जाति के नाम पर लोगों में दरारें पैदा कर रहे हैं। इनकी कथनी और करनी में अंतर पडने लगा है। आज अवसरवादी नेताओं की तादाद बढ़ रही है। वर्तमान में ये नेता लोग लोगों को विकास करने के झूठे वादे कर रहे है। इन नेताओं में दलबदलू वृत्ति का संचार हुआ है। इस प्रकार आज राजनीति में परिवर्तन हो रहा है जिसके कारण ग्रामीण समाज पिछड रहा है विकास की बुलंदियों को छू नहीं पा रहा हैं।

निष्कर्ष :-

आधुनिक युग में विभिन्न दलों की एक सरकार बनकर बहुमत का स्वाँग दिखाने की प्रवृत्ति पनप रही है। ऐसी सरकारे समय की माँग कहकर लाभ उठानेवाले नेता है, परंतु इसमें देश का विकास नहीं होता बल्कि छोटे- छोटे दल अपना हित देखते है। प्रादेशिकता की भावना बढ रही है, जो राष्ट्रीय एकात्मता के लिए बडा खतरा है। आधुनिक युग में विशेषत : सन 1990 के पश्चात लिखे उपन्यासों में इसका चित्रण हुआ है। बदलती राजनीति, बदले की भावना से बनी बिघडी राजनीति, आज चिंता का विषय है ऐसा लगता है।

अंत में हम कह सकते है, भारतीय समाज व्यवस्था में सामाजिक जीवन पर प्रभाव डालने वाले पहुलओं में राजनीतिक दलों का महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। राजनीतिक दल के कारण समाज व्यवस्था में परिवर्तन होता आया है। नागार्जुन के राजनीतिक विचार सरल एवं स्पष्ट हैं। वे समकालिन राजनीति और उससे संचलित जीवन से जुडे है। अपनी सीधी-साधी भाषा में राजनीतिक स्थिति का तिखे शब्दों में चित्रण करते है। अत: उन्होंने अपने उपन्यास साहित्य में ग्रामीण राजनीतिक स्थिति का ब्यौरा दिया है।

प्राचीन काल से आज तक राजनीति के बलबुते पर राजनीति और नेता भ्रष्ट हो गए है। आजादी प्राप्ति के लिए जिन-जिन नेताओं ने अपना सर्वस्व का त्याग किया आज वही नेता अवसरवादी नेता बन बैठे है। देश को दोनों हाथों से लूट रहे हैं जिसके कारण देश का ग्रामों का विकास नहीं हो रहा हैं।

नागार्जुन ने 'रतिनाथ की चाची' (1948), 'बलचनमा' (1952), 'नई पौध' (1953), 'बाबा बटेसरनाथ' (1954) आदि उपन्यासों में ग्रामों में स्थित राजनीतिक परिस्थिति पर प्रकाश

डाला है। यहाँ पर लेखक ने 'रतिनाथ की चाची' के शतरंज की खिलाडिन दमयंति का जिक्र किया है जो एक किसी राजनीतिज्ञ से कम नहीं है। 'बलचनमा' में चुनाव तथा नेआतों की भ्रष्ट नीति पर प्रकाश डाला है। तो 'बाबा बटेसरनाथ' में आजादी के लडाई में जो राजनीतिक उथल-पुथल हुई है इसका चित्रण किया है।

अवसरवादी नेताओं की वजह से सामान्य जनता का शोषण होता है। 'रतिनाथ की चाची' में के किसानों के संघर्ष को अवसरवादी नेता चौपट करते है इसका चित्रण हुआ है। तो 'बलचनमा' में कांग्रेसी लोग (अवसरवादी) किसानों को ठगते है। 'बाबा बटेसरनाथ' में लेखक ने अवसरवादी नेताओं की नीति का चित्रण किया है। 'किसान-सभा' की स्थापना परिवर्तित राजनीति का प्रमाण है। जमींदारों और राजनीतिज्ञों की साँठ-गाँठ का मुँह तोड जवाब देनेवाला यह संगठन आज भी महत्त्वपूर्ण लगता है। जमींदारों की मनमानी, नेताओं की गुंडागर्दी, भ्रष्टाचार के हथकण्डे, अफसरों की वृत्ति पर यहाँ प्रकाश डालते हुए राजनीति के नए नए आयाम स्पष्ट किए है। काँग्रेसी राजनीति का परदाफाश करके गांधीजी की काँग्रेस अब नहीं है इसे स्पष्ट किया है।

आजादी के बाद अपनी सरकार आयी। आगे चलकर संविधान बनाया, जिसमें चुनाव प्रक्रिया शुरू की। राजनीतिक दलों ने चुनाओं में लाखों रूपये खर्च किए । दौर, प्रचार, सभाओं का आयोजन होने लगा। राजनीतिक दलों ने अपने-अपने उम्मीदवार खडे करना शुरू किया है। 'रतिनाथ की चाची' में नेता लोग किस तरह चुनाव जीतते है तथा अपने वादों से किस तरह मुखरते है इसका चित्रण हुआ है। 'बलचनमा' में चुनाव के संदर्भ में बलचनमा और बच्चू के बीच हुअी चर्चा इसका प्रमाण है। 'बाबा बटेसरनाथ' में जीवनाथ और जैकिसुन दोनों के बीच चुनाव में किस पार्टी को वोट देना चाहिए इस संदर्भ में चर्चा होने की बात कहीं हैं।

आज राजनीति सत्ता प्राप्ति का साधन बनी है। 'रतिनाथ की चाची में शुभंकरपूर ग्राम में राजनीति को सत्ता हथियाने का साधन बनानेवाले नेआतों का पर्दाफाश किया है। 'बलचनमा' में सेठ, साहूकार, राजनीतिक सत्ता के माध्यम से आजादी के बाद क्या क्या हासिल करेंगे इसका चित्रण हुआ हैं। 'बाबा बटेसरनाथ' में राजनीति सत्ता प्राप्ति का साधन हैं इसे तिखे व्यंग्यात्मक तरीके से लेखक ने चित्रित किया है। आज के भ्रष्ट नेता राजनीति के माध्यम से देश का विकास नहीं कर रहे बल्कि अपना खुद का ही विकास कर रहे है इसे स्पष्ट किया है।

वर्तमान ग्रामीण जीवन में राजनीतिक स्थिति अत्यंत सोचनीय हो गयी है। भ्रष्ट नेताओं के कारण वर्तमान राजनीति का स्वरूप बदल गया है। इन नेताओं की करनी और कथनी में अंतर है। जिसके कारण स्वरूप ग्रामीण लोगों का शोषण हो रहा है। ग्रामीण समाज सुख-सुविधाओं से कोसों दूर रहा है। राजनीति में आज भ्रष्ट और चारित्र्यहीन नेताओं ने कदम रखे है वे दोनों हाथों से जनता को लूट रहे हैं लेकिन आज लोग शिक्षित और संगठित होकर इन भ्रष्ट नेताओं का पर्दाफाश करने में सफल हुए है। आज राजनीति में शीघ्रता से परिवर्तन हो रहा है। आज नेताओं ने भ्रष्ट नीति का अवलंब करके राजनीति को अपने हाथ की कठपुतली बनाया है जिसके कारण स्वरूप ग्रामीण समाज, तथा भारत देश का विकास नहीं हो रहा है। इसके लिए वर्तमान राजनीतिक स्थिति ही जिम्मेदार है ऐसा मुझे लगता है।

संदर्भ सूची

1. डॉ. रमेश देशमुख - 'आठवें दशक की हिन्दी कहानी में जीवनमूल्य', विद्या प्रकाशन, कानपुर, प्र. सं. 1994, पृ. 146.
2. गोविंद सदाशिव घुर्ये - 'जाति वर्ग और व्यवसाय', पॉप्युलर प्रकाशन, बम्बई, प्र. सं. 1984, पृ.264.
3. डॉ. अर्जुन चव्हाण - 'राजेन्द्र यादव के उपन्यासो में मध्यवर्गीय जीवन', राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र.सं. 1995, पृ.133.
4. नागार्जुन - 'रतिनाथ की चाची', पृ. 48
5. डॉ. सुरेश बत्रा - 'हिन्दी उपन्यासों में नारी अस्मिता', रचना प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र. सं.1998, पृ. 16.
6. नागार्जुन - 'बलचनमा', किताब महल, इलाहाबाद, प्र. सं. 1952, पृ.195.
7. वह, पृ. 205.
8. डॉ. सुभद्रा पैठणकर - 'स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी काव्य : युगीन संदर्भ', विद्याविहार प्रकाशन, कानपुर, प्र. सं. 1998, पृ. 98.
9. नागार्जुन - 'बाबा बटेसरनाथ', राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र. सं. 1954, पृ. 83.
10. वही, पृ. 79.
11. सर्वेश्वर दयाल सक्सेना - 'गर्म हवाएँ', राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, प्र. सं. 1969, पृ.30-31.
12. धूमिल - 'संसद के सड़क तक', पटकथा धूमिल, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, प्र. सं. 1975, पृ.137.
13. नागार्जुन - 'रतिनाथ की चाची', किताब महल प्रकाशन, इलाहाबाद, प्र. सं. 1948, पृ.96.
14. नागार्जुन - 'बलचनमा', किताब महल, इलाहाबाद, प्र. सं. 1952, पृ.195.
15. डॉ. सुभद्रा पैठणकर - 'स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी काव्य : युगीन संदर्भ', विद्याविहार प्रकाशन, कानपुर, प्र. सं. 1988, पृ. 109.
16. नागार्जुन - 'बाबा बटेसरनाथ', राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र. सं. 1954, पृ. 110
17. 'नई दुनिया', इन्दौर, 11 मार्च 1962.

18. नागार्जुन - 'रतिनाथ की चाची', किताब महल प्रकाशन, इलाहाबाद, प्र. सं. 1948, पृ.94.
19. वही, पृ. 44.
20. नागार्जुन - 'बलचनमा', किताब महल, इलाहाबाद, प्र. सं. 1952, पृ.195.
21. नागार्जुन - 'बाबा बटेसरनाथ', राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र. सं. 1954, पृ.105.
22. वही, पृ. 108.
23. डॉ. सुभद्रा पैठणकर - 'स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी काव्य : युगीन संदर्भ', विद्याविहार प्रकाशन, कानपुर, प्र. सं. 1998, पृ. 116.
24. सर्वेश्वर दयाल सक्सेना - 'रंग तरबूजे का', राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र. सं.1982, पृ. 11-12.
25. नागार्जुन - 'रतिनाथ की चाची', किताब महल प्रकाशन, इलाहाबाद, प्र. सं. 1948, पृ.94.
26. नागार्जुन - 'बलचनमा', किताब महल, इलाहाबाद, प्र. सं. 1952, पृ.64.
27. वही, पृ. 133.
28. नागार्जुन - 'बाबा बटेसरनाथ', राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र. सं. 1954, पृ.110.
29. नागार्जुन - 'काँग्रेस का इतिहास', भाग - 2, पृ. 5 (भूमिका).
30. डॉ. सुभद्रा पैठणकर - 'स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी काव्य : युगीन संदर्भ', विद्याविहार प्रकाशन, कानपुर, प्र. सं. 1988, पृ. 113.
31. डॉ. रमेश देशमुख - 'आठवें दशक की हिन्दी कहानी में जीवनमूल्य', विद्या प्रकाशन, कानपूर, प्र. सं. 1994, पृ. 146.
32. नागार्जुन - 'रतिनाथ की चाची', किताब महल प्रकाशन, इलाहाबाद, प्र. सं. 1948, पृ.94.
33. नागार्जुन - 'बलचनमा', किताब महल, इलाहावाद, प्र. सं. 1952, पृ.133.
34. नागार्जुन - 'बाबा बटेसरनाथ', राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र. सं. 1954, पृ.43.
35. निलिमा सिंह - 'धूप के दर्पण में', हिमाचल पुस्तक भांडार, प्र. सं. 1983, पृ. 34-35.
36. नागार्जुन - 'रतिनाथ की चाची', किताब महल प्रकाशन, इलाहाबाद, प्र. सं. 1948, पृ.94.
37. वही, पृ. 96.
38. नागार्जुन - 'बलचनमा', किताब महल, इलाहावाद, प्र. सं. 1952, पृ.182.
39. नागार्जुन - 'बाबा बटेसरनाथ', राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र. सं. 1954, पृ.104.

40. वही,पृ. 42.

41. श्रीमती सरोज यादव - 'हिन्दी के आँचलिक उपन्यासों में राजनीतिक चेतना', अन्नपूर्णा प्रकाशन, कानपुर, प्र. सं. 1996, पृ. 161.

42. नागार्जुन - 'रतिनाथ की चाची', किताब महल प्रकाशन, इलाहाबाद, प्र. सं. 1948, पृ.94.

43. नागार्जुन - 'बलचनमा', किताब महल, इलाहाबाद, प्र. सं. 1952, पृ.166.

44. वही, पृ. 166.

45. वही, पृ. 188.

46. नागार्जुन - 'बाबा बटेसरनाथ', राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र. सं. 1954, पृ.110.

47. डॉ. रामविनोद सिंह - 'नये दशक के हिन्दी उपन्यास', अनुपम प्रकाशन, पटना, (1994 प्र.सं.) पृ. 25.

48. डॉ. सुभद्रा पैठणकर - 'स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी काव्य : युगीन संदर्भ', विद्याविहार प्रकाशन, कानपुर, प्र. सं. 1998, पृ. 138.

-----x-----